2021-2022

ANNUAL REPORT

unheard voices of children

AVANITI EDUCATION
AND TRAINING
FOUNDATION

www.avaniti.org

AVANITI EDUCATION AND TRAINING FOUNDATION

Towards a society where every child's voice and ways of learning are respected

Not for profit organization with registration of 12A & 80G
CIN:
U80904PN2018NPL178372
Country of origin:
India
Founded:
2018
Loction:
Pune, Maharashtra
Dhamatri, Chhattisgarh

Visit us on
Instagram:
https://www.instagram.com/avaniti.org5/
Facebook:
https://www.facebook.com/avanitiedu
LinkedIn:
https://www.linkedin.com/company/avaniti/
Website:
https://www.avaniti.org/

content

message from the founder

First day in school

about avaniti

our approach

key stats

Voices of children

field diary

team

partners

message from the founder

The academic year of 2021-22 followed the same pathway of previous year's disaster and losses due to the COVID 19 pandemic which sent our lives behind in several aspects including the learning level of children. Several studies found out that due to this pandemic, huge loss of learning has happened among the students of elementary, secondary and senior secondary levels. But unfortunately, I hardly recall people talking about the overlooking which occurred in the domain of early childhood education. Research in neuroscience highlights the importance of early age groups and the learning experiences that should be provided at this stage yet millions of early age groups children were devoid of early childhood education for a period of almost two years. With New Education Policy 2020 recommending one of the biggest structural changes of combining early childhood education with grade 1 and 2 and renaming it as the foundational stage, our utmost responsibility become to draw the focus and attention more towards providing quality access to early education to every child irrespective of the existing situations and challenges.

Continuing our work at Avaniti Education and Training Foundation we ensured our work in both the domain of access to education and developing the quality of the government early education system through community-based interventions and collaborative efforts. Our PHOOLBATI program continued to focus upon providing access to early education to the children from the Kamar community (a PVTG) through community owned learning centers that follow context-based and child-led learning methodologies. We also worked with the children of government anganwadis through parental involvement and systemic approaches for developing a quality early learning environment.

Ashwini

स्कूल में मेरा पहला दिन

आज मेरा स्कूल में पहला दिन था। मैं मन ही मन बहुत खुश थी, यह सोचकर कि अब मैं भी मेरे पड़ोस की भवानी की तरह बैग में कापी, किताबें, पेन्सिल, सब कुछ रखकर कंधे पर पीछे लटकाऊंगी और शान से स्कूल जाऊँगी। इसके पहले मैं आँगनवाड़ी जाती थी जहाँ बैग, किताब की जरूरत ही नहीं पड़ती थी। हमारी मैडम हमको आँगनवाड़ी में ही पेपर और कलर देती थी जिससे हम पेंटिंग किया करते थे।

पहले दिन स्कूल पहुंचने पर मैं खुश होने के साथ–साथ थोड़ी सहमी हुई भी थी क्योंकि मेरे गाँव के बड़े बच्चे, जो बड़ी क्लास में पढ़ते थे वो गाँव में हमें कितना तंग करते हैं और यहाँ सर–मैडम की बातों का तुरन्त पालन कर रहे थे। घंटी बजी और उनको देखकर हम सब भी कतार में खड़े होकर सर की बातों का पालन करने लगे। मुझे डर भी लग रहा था क्योंकि सर कुछ बच्चों पर चिल्ला रहे थे। समझ ही नहीं आ रहा था कि सब लोग कतार में खड़े होकर आखिर क्या करने वाले हैं। फिर जब सब कुछ व्यवस्थित हो गया तो बड़ी क्लास से दो बच्चे आये और हाथ जोड़कर कुछ गाने लगे। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था किन्तु डर के मारे मैं भी सबके साथ बुदबुदाने लगी। मैंने सामने खड़े दोनों बड़े क्लास के बच्चों पर अपनी आँखें टीका दी और वो जैसा करते वैसा ही दोहराने का प्रयास करने लगी। यह सब खत्म होने के बाद हम कतार में अपनी कक्षा में गये और उसी कतार में फर्श पर बिछी टाट–पट्टी पर बैठ गये। हमारे दूसरी तरफ उसी कमरे में दूसरी के बच्चे भी बैठे हुए थे। जैसे ही मैडम कमरे में आयी सभी बच्चे हाथ जोड़कर खड़े हो गये। मैं भी हड़बड़ा गयी और हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी। मेरे सामने बैठा राजा खड़ा होने के बजाय सबके तरफ देख रहा था जिसके वजह से मैडम नें उसे बहुत डांटा और उसके बाद कहा कि जब भी मैं या सर कमरे में आये तो तुरन्त हाथ जोड़कर खड़ा हो जाना है। मैडम के कहने के बाद हम सब बैठ गये। उसके बाद मैडम सबका नाम बुलाने लगी और सब बारी–बारी खड़े होने लगे। मैडम लेकिन एक बड़ी सी कापी में अपनी नजर गड़ाये हुए थी और कुछ लिखते जा रही थी। एक पर एक बच्चे खड़े होते गये और कुछ बोलकर बैठ जाते। मेरी बारी आने पर मैं भी झट से खड़ी हो गयी लेकिन मुझे समझ में नहीं आया की बोलना क्या है तो मैंने– ' 'हाँ मैडम' बोल दिया। मैडम नें कापी से अपनी आँखें ऊपर उठायी और मुझे घूरने लगी। कुछ देर घूरने के बाद उन्होंने कहा कि 'प्रेजेन्ट मैडम' बोलना है। मैंने सर हिलाकर हामी भर दी। मैं अन्दर से बहुत डरी हुई थी। मैडम कापी वाला काम खत्म करने के बाद चाक से बोर्ड पर कुछ–कुछ लिखने लगी। लेकिन मैं कही और ही खोयी हुई थी। मेरे मन में मेरे पुराने स्कूल का चित्र घूम रहा था। मुझे वहाँ की एक–एक बात याद आ रही थी। कैसे हम अपने साथियों के साथ हँसते–खेलते थे और अपनी मर्जी से जहाँ चाहे खड़े हुए, और जब चाहे बैठ जाते थे। हमको किसी कतार में खड़े होने और बुदबुदाने की जरूरत ही नहीं पड़ी। सीधे स्कूल में घुसे और अपने हिसाब से साथियों के साथ बैठ गये । स्कूल पहुंचते ही हमारी मैडम हम सबसे पिछले दिन क्या–क्या खेले, क्या खाया सब कुछ पूछती थी और हमारे मन में भी सब कुछ बताने की कितनी उत्सुकता रहती थी। मैं तो अगर घर में डाँट पड़ती तो वो भी जाकर अपनी मैडम से शिकायत किया करती थी। हमारी मैडम ने हमको हाथ जोड़कर खड़े होने के लिए कभी नहीं कहा और न ही हमें एक–एक करके खड़ा होकर ''प्रेजेन्ट मैडम'' बोलना पड़ता था। हमारी मैडम अगर हमारा कोई साथी नहीं आता था तो हम सबसे पूछती थी कि वह क्यों नहीं आया और उसके घर बुलाने तक चली जाती थी। मुझे आज भी याद है कि मुझे बुखार हुआ था और मैं एक दिन स्कूल नहीं गयी थी। उसी दिन मैडम मुझसे मिलने आयी थी ।

अचानक एक तेज आवाज सुनकर मेरा ध्यान टूटा। मैडम मेरे सामने खड़ी थी और चिल्लाकर पूछ रही थी तुमने लिखना क्यों नहीं शुरू किया?'' मैं हड़बड़ा कर सामने रखी कापी पर पेन्सिल से बोर्ड पर बनाये गये चित्रों को उतारने की कोशिश करने लगी।

मेरी सारी खुशियाँ और उत्साह जो इस नये स्कूल में आने के पहले थी, वो लगभग खत्म हो गयी। मुझे अब पुराने स्कूल की याद बार–बार आने लगी। वहाँ के खेल–खिलौने, मैडम से बातचीत करना, चाक से दीवार पर पेंटिंग बनाना, गरमागरम खाना और दोस्तो के साथ मस्ती करना।
यहाँ इस स्कूल में खेल–खिलौनों का तो नामो–निशान तक नहीं था और चाक

का इस्तेमाल केवल मैडम या सर ही करते थे। बात–चीत करना तो मानो गुनाह था और गलती से भी यदि एक शब्द मुँह से निकल जाये तो सर–मैडम की डॉट, बड़ी–बड़ी आँखें और कभी–कभी किस्मत ज्यादा खराब रही तो मार भी खाना पड़ता था। और हाँ, नहीं बोलना हमेशा हमको नहीं बचाता था, उदाहरण के लिए सर–मैडम के अजीबों गरीब सवाल सुनकर यदि कोई खामोश रहता तो भी उसकी खैर न थी।

धीरे–धीरे मेरा मन स्कूल के नाम से हताश होता गया और मुझे स्कूल जाने की तनिक भी इच्छा नहीं होती। लेकिन मेरे पास और कोई चारा भी तो नहीं था। घर पर कई बार इसको लेकर माँ से बात करना चाहा लेकिन स्कूल नहीं जाने या स्कूल के बारे में कुछ बुरा सुनने को कोई तैयार ही नहीं था। लगातार डांट सुनने के बाद मैंने वहाँ से भी कोई आस रखना छोड़ दिया। मन मार के स्कूल में सर–मैडम की डांट और मार से बचने के तरीके ढूंढ–ढूंढ कर अपनाने लगी।

एक दिन अपने पुराने स्कूल के पास से गुजरते समय मेरी पुरानी मैडम ने खुशी से मेरी तरफ देखा और पूछा– ''क्यों, कैसा है तुम्हारा नया स्कूल?'' मैंने जवाब देने के बजाय उनसे यह पूछा– ''क्या मैं वापस आपके स्कूल में नहीं आ सकती?'' तब मैडम नें हँसते हुए कहा– ''अरे! अब इस स्कूल में आकर क्या करोगी तुम? अब तुम बड़ी हो गयी हो और बड़े स्कूल में पढ़ोगी। वहाँ के सर–मैडम लोग तुमको बहुत अच्छे से पढ़ाएंगे ताकि तुम जीवन में आगे बढ़ सको।''

यह सुनकर मेरे मुँह से कुछ नहीं निकला। मैंने चुपचाप अपना सिर नीचे किया और अपने नए स्कूल के तरफ चलने लगी।

कृष्णा

About Avaniti

Avaniti Education and Training Foundation is a not for profit organization registered in August 2018 under section 8 (1) of the companies act, 2013 (India). We are currently present in the Dhamtari district of Chhattisgarh and work towards providing access to early childhood education to the children devoid of preschool education and come from the most disadvantaged sections of our society such as Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTG). Avaniti also works with the government anganwadis of tribal and rural belts to improvise the quality of early childhood education through localized and play based projects. We believe in collaboration with children, teachers, parents, and other stakeholders at various levels to develop and promote a Context-Based and Child-Led (CBCL) learning environment for children in their early age groups (3 to 8 years). Our work includes developing community-owned learning center and curriculum specific to the learner's context and culture. We offer courses, workshops and provide on-site support to the teachers, parents and other stakeholders.

Vision

Towards a society where every child's voice and ways of learning are respected

Mission

To promote an environment of learning led by the learner

Our approach & process

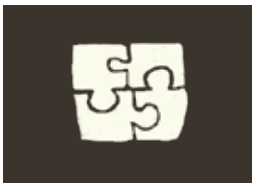

Collaboration with children

Collaboration with teachers

Collaboration with parents

Material development

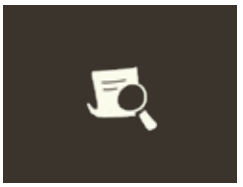

Research & Advocacy

key stats

45 children
(access to ECE)

11 anganwadis
(regular)

400+ angan-
wadi teachers

30 parents
(regular)

1300+ children

voices of children

''सोनू अपने घोड़े पर बैठ के जा रही थी। वह जंगल के रास्ते से जा रही थी। रास्ते में उसका एक्सिडेंट हो गया। रास्ते में उसको घर, पेड़, और फूल दिखे। फिर सोनू को जोर से प्यास लगी। उसने पेड़ के नीचे रखे घड़े से पानी पीया। फिर उसको नींद आ गयी। उसे सपने में भूत दिखे। भूत लोग लड़ रहे थे। सोनू की नींद खुल गयी। वो घोड़े पर बैठ कर वापस चली गयी।''

Every child has innumerous stories to tell. Matiya, an 8 years old girl who got dropped out during COVID-19 but now she has started visiting school again. This story has been narrated and drawn by her.

''नदी के किनारे मेरा एक बहुत सुंदर महल है जिसमें जाने का बस एक ही रास्ता था जो नदी के बीच से होकर जाता था। मैं और मेरी दोस्त दोनो किनारे पर खड़े थे। तभी हमने नाव में एक आदमी देखा। हम बहुत खुश हुए और नाव को अपनी ओर बुलाने लगे। नाव बहुत दूर थी लेकिन धीरे– धीरे हमारी तरफ आने लगी। लेकिन जैसे ही नाव हमारे नजदीक आई हम डर गए और हमारे बाल खड़े हो गए। नाव खाली थी और हमे पता चला कि जो आदमी हमने देखा था वो एक भूत था।''

Bhumika, 8 years old studying in government primary school is from our first batch who loves listening to the stories and sharing her wonderful ones with us. This drawing by Bhumika represents one of her interesting stories.

During circle time of a project around 'Understanding self' when we were having discussion around below three points, some wonderful voices came out.

- What would you like to be after growing up?
- When do you get angry?
- What do you like the most?

''बड़ा होके गोदी जहूं अउ पइसा कमाहूं''
''मम्मी पीटथे तब गुस्सा आथे''
''खेलना सबसे ज्यादा पसंद हे''

4 years old Aarush shared that he wants to become like his Papa, i.e.- he would become a daily wage labourer under MGNREGA and earn money. He gets very angry when mummy beats him and he likes to play the most.

''मे बड़ा होके स्पाइडर मैन बनहूं काबर वो लिट्टो मन के अच्छा वाला वीडियो बनाथे। मे भी बनाहूं''
''मोला खेलना, लड्डू खाना, और आंगनवाड़ी जाना पसंद हे''

Raja wants to become a spider man as he makes nice videos of birds and Raja wants to do the same. Raja loves to eat laddu which is provided in the center during snacks time and he loves to go to the center.

''मे बड़ा होके सर बनहूं। बूता काम करहूं''–
''मां जब धाकथे तहन गुस्सा आथे''
''रात होथे भात खातहन और सूतथन तब अच्छा लागथे''
''पढ़े ला नई भाए खेले ला अच्छा लागथे''

I would like to become a teacher once I grow up and I will do all the work. I feel angry when my mom yells at me. When I eat rice at night and sleep that is the best part of my day. I do not like to study but love to play.

says karina

''मे बड़ा होके बेंदरा बनहूं अऊ टिप–टिप में चढ़ के जाम खाहूं''–
''मैडम डांटथे तहन गुस्सा आथे''
''बॉल खेलना पसंद हे''

I will become a monkey after growing up and run on the top of the tree to pluck and eat guava. I get angry when madam yells at me. I love to play ball.

says Jitesh

''मद बनाना अच्छा लागथे''

Shivcharan says that he likes to make Mahua liquor.

FIELD DIARY

community centers

Morning meeting at Lattidera center.

Children reflecting upon their learning after an activity.

Free play giving an opportunity to bring-in the elements of their outside school life.

Gilmpse of projects that focus on developing skills of collaboration.

work
with anagnwadis

Anganwadi teacher incorporating new pedagogy to make learning child-centric and play based.

Anganwadi tearchers of Dongardula-2 sector are understanding their role better by exploring more about early childhood education and its importance during a one day workshop.

Primary school teachers (1st and 2nd grade only) and anganwadi teachers joining their hands to strengthen foundational stage of education. Memebers of Avaniti facilitated the workshop on Introduction to NEP 2020 focusing upon the Foundational satage of education.

parent engagements

Women’s day celebration at Lattidera center.

Celebration of nutrition fair at Lattidera center

Meeting with Sarpanch and Sacheev of gram panchayat Banbagaud

Community taking forward one of the projects in Chandanpur village.

team development

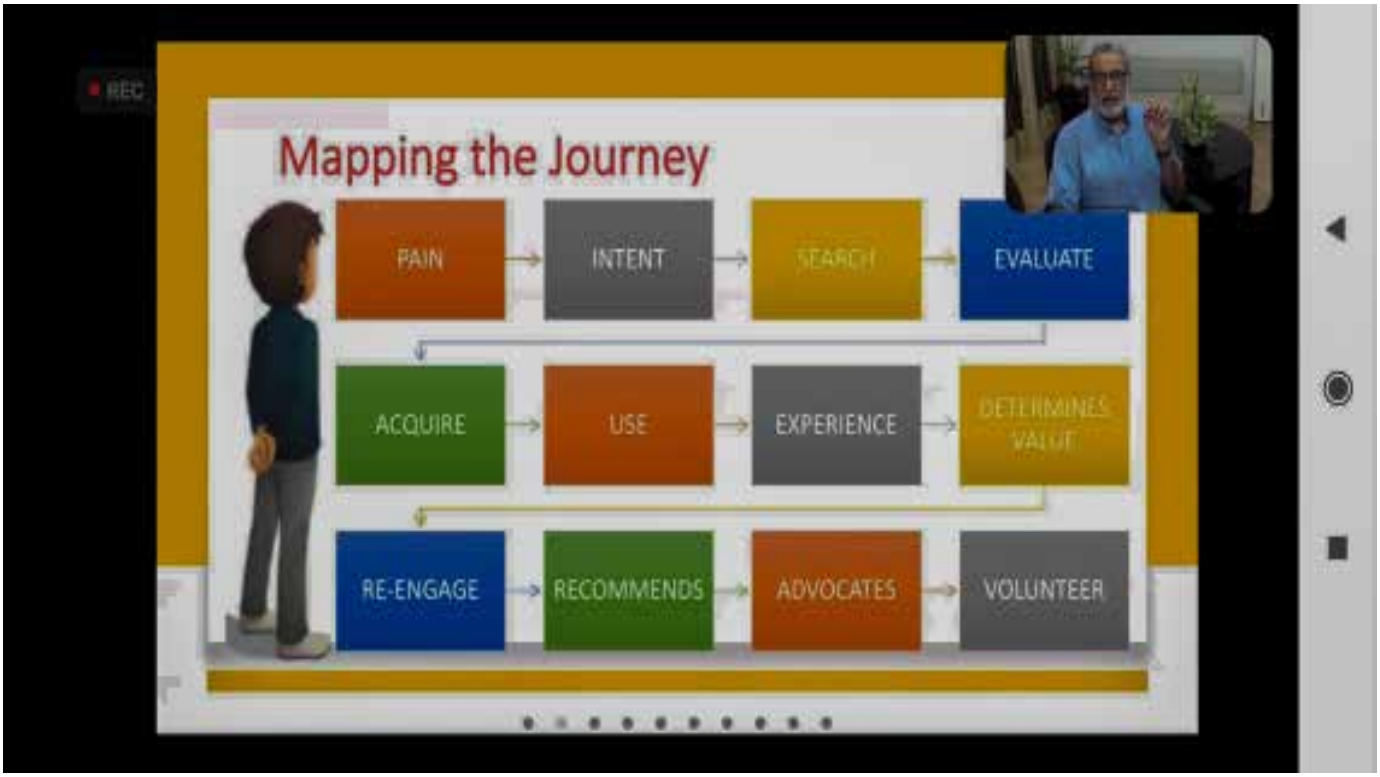

Capacity building is considered as the backbone of our organization which was continuously promoted through the online sessions organized by Wipro Foundation, NSRCEL, and UnLtd India during the lockdowns. The team members of Avaniti explored some important topics, such as- meaning of social entrepreneurship, pitch preparation, finance and accounting, fundraising, team building, monitoring & evaluation, and themes around children's education and rights.

Weekly review and planning meeting

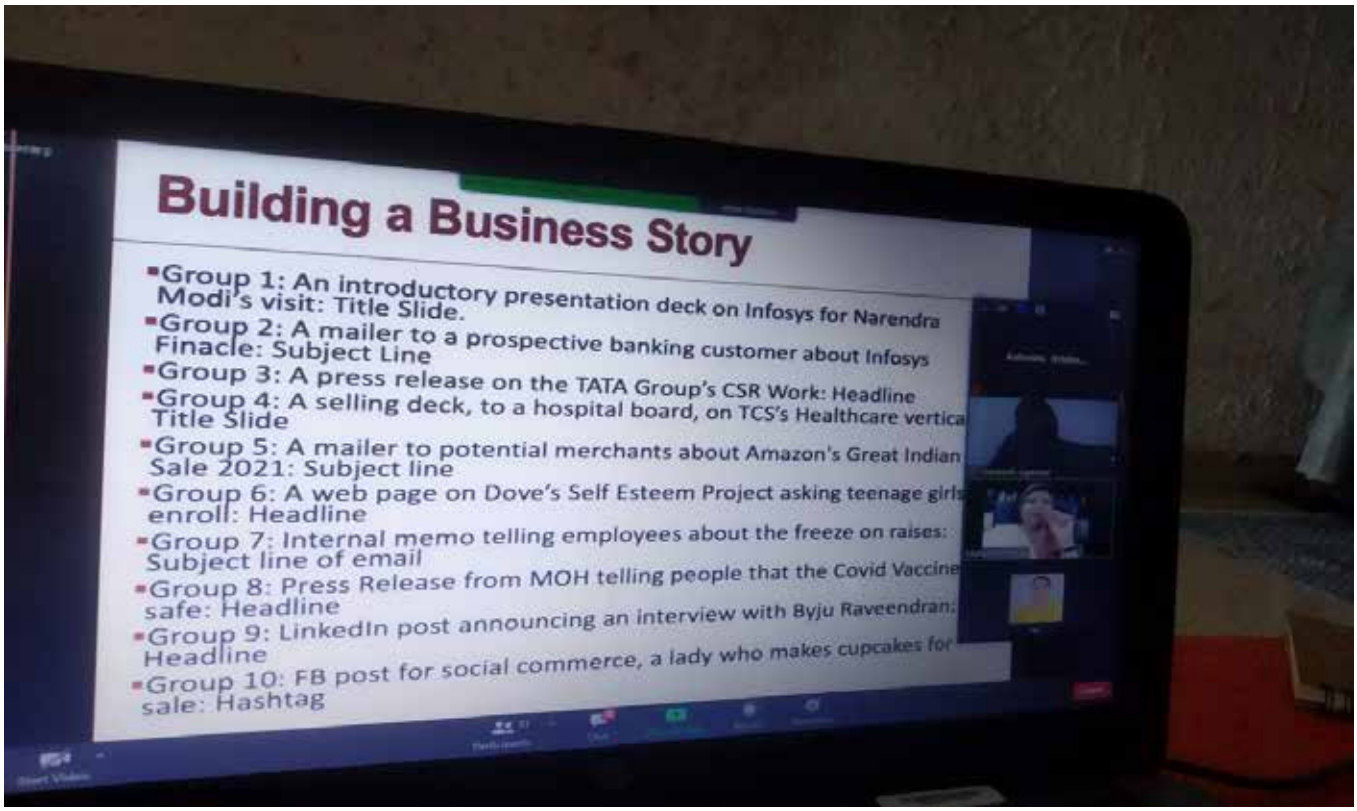

A session on 'Building a Business story' organized by NSRCEL team of IIM Bangalore

other activities

Azim Premji University's student completed her internship under the guidance and support of Avaniti team members where her focus was to understand the context and challenges of early childhood education in tribe dominated regions

Avaniti family got the community hall as premise for the center from the Gram Panchayat. We all along with the children converted the hall into school and is called 'Anganwadi' now by the children as there is no government anganwadi available in their village

Exposure visit to Gangrel

This was the first time for all the young children of Lattidera to visit Gangrel dam which is situated in Dhamtari district and is around 30 kilometers away from the village. Despite being this close, children had never visited this famous dam and garden near it. They had only heard about it from elder children who too had read in their textbooks and were often curious about the word ‘garden’ and use of dam.

team

Domendra, Community Leader

Samari, Community Leader

Ashwini, CEO

Ramkumari, Community Leader

Santoshi, Community Leader

Krishna, Operations

Anita, Community Leader

Apurva, Media

empowered by

special thanks to

A.Sekar
Amarendra Singh Yadav
Amit Kumar
Ankita
Apurva Patil
Arati Sudhir Bapat
Asmita Yadav
Chandrabha Mukherjee
Fr. M. Govardhan
Kshitij Jagtap
Manish Uddhav Patil
Preeti Yadav
Priyadarshini Yadav
Raghu Ram Kiran Prathapa
Rajani Yadav
Rajat Sharma
Rakesh sharma
Rakhi Patil
Ravindra Patil
Shalini Singh
VG Somasekhar

THANK YOU...

To know more, visit us @
https://www.avaniti.org/

Donate us
Account Name-AVANITI EDUCATION AND TRAININGFOUNDATION
Account No. 38359720995
Bank Name-STATE BANK OF INDIA
IFSC-SBIN0000361
Address- Dhamtari, Chhattisgarh